व्याख्यान

बी.ए. पार्ट - I

हिन्दी (अनुपूरक/वैकल्पिक)

अध्ययन सामग्री

खण्ड (ख)

दिनांक :- 25.04.2020

* काव्य लक्षण और काव्य प्रयोजन

डॉ० संतोष कुमार
सहायक प्राचार्य (हिन्दी विभाग)
भारती मंडन महाविद्यालय,
रहिका, मधुबनी

⇛ काव्य लक्षण :-

सर्वप्रथम, काव्य क्या है?

काव्य लक्षण अथवा काव्य की परिभाषा :-

भारतीय काव्यशास्त्र में परिभाषा को लक्षण शब्द से अभिहित किया गया है। काव्य की उत्पत्ति के समय से ही उसके लक्षणों पर विचार होने लगे। काव्य या कविता क्या है? यह जानना सर्वप्रथम आवश्यक है। साधारण अर्थों में कवि द्वारा व्यक्त मनोभावों को काव्य या कविता कहते हैं या, कवि द्वारा संपादित कर्म को ही काव्य कहते हैं। कहा भी गया है — 'कवेरिदं कार्य भावो वा'। काव्य की व्याख्या के लिए 'कवि' शब्द को समझना आवश्यक है। 'कु' धातु में अच् प्रत्यय (इ) जोड़कर 'कवि' शब्द की व्युत्पत्ति बतलाई गई है। यहाँ 'कु' का अर्थ है- 'व्याप्ति', 'आकाश', 'अनंतता' अर्थात् 'सर्वज्ञता'। फलतः कवि ही द्रष्टा है, स्रष्टा है। लौकिक साहित्य में आकर 'कवि' शब्द की अर्थ व्याप्ति कुछ कम हो जाती है और रमणीय शैली में शब्दार्थ को रचने वाले के अर्थ में प्रयुक्त होने लगता है। काव्य लक्षणों को विभिन्न आचार्यों ने अपने समय और परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। सर्वप्रथम काव्य के लक्षणों पर विचार करने वाले पहले आचार्य 'भरतमुनि' माने जाते हैं। हालांकि उन्होंने स्पष्टतः किसी काव्य-लक्षण का उल्लेख नहीं किया है। भरतमुनि ने नाटक पर आधारित काव्य लक्षण प्रस्तुत किया है। जो सात हैं— 1. मृदु-ललित-पदावली 2. गूढ़ शब्दार्थहीनता 3. सर्व-सुगमता 4. युक्तिमत्ता 5. नृत्य में उपयोग किए जाने की योग्यता (नृत्योपयोगयोग्यता) 6. रस के अनेक स्रोतों को प्रवाहित करने का गुण (बहुकृतरस मार्गता) 7. संधियुक्तता।

यहाँ क्रमशः वर्णित विशेषताओं में पाँचवाँ तथा सातवाँ नाटक (दृश्य काव्य) की दृष्टि से वर्णित हैं, शेष में श्रव्य काव्य के गुण हैं।

● भामह :- अलंकारवादी भामह का काव्य-लक्षण इस प्रकार है — 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' अर्थात् शब्द और अर्थ दोनों का सहभाव काव्य है। काव्य-लक्षण का वास्तविक विकास भामह से होता है। भामह ने अपने ग्रंथ 'काव्यालंकार' अपने से पूर्व की दो विचारधाराओं का उल्लेख किया है। एक विचारधारा ~~अर्थ~~ अर्थालंकारों को काव्य-सौंदर्य का मूलाधार मानती है तथा ~~दूसरी~~ दूसरी शब्दालंकारों को। किन्तु दोनों विचारधाराएँ काव्य-सौन्दर्य का आधार अलंकारों में ही खोजती है।

दण्डी :- दण्डी ने काव्य-लक्षण को इस प्रकार परिभाषित किया है — 'शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवाच्छिन्ना पदावली' अर्थात् काव्य का शरीर वांछित अर्थ को उद्घाटित करने वाली पदावली होती है। ~~दण्डी~~ दण्डी शास्त्रज्ञ ही नहीं बल्कि कवि भी हैं। इसलिए रस चेतना पर उनका ध्यान केन्द्रित है - यथा, 'अलंकृतम-संक्षिप्तं रसभाव निरंतरम्'। किन्तु यहाँ 'रस' शब्द रस-जन्य आनंद के लिए न होकर अलंकार-जन्य चमत्कार से है।

वामन :- वामन अलंकारों की अपेक्षा काव्य हेतु गुण को को अधिक महत्व देते हुए कहते हैं कि ∴ काव्यं ग्राह्यमलंकारात्। सौंदर्यमलंकारः। काव्य में सौन्दर्य दोषों के त्याग और गुणों के ग्रहण के कारण होता है। साथ ही वे भामह और दण्डी के विचार-परंपरा को आगे बढ़ाते हैं।

रुद्रट :- अलंकारवादी आचार्य रुद्रट ने अपने लक्षण से सहितौ को निकाल दिया। अर्थात् वे शब्द और अर्थ दोनों को ही काव्य मानते हैं। उन्होंने कहा - 'ननु शब्दार्थौ काव्यम्'।

कुन्तक :- आचार्य कुन्तक ने आनंदवर्धन तथा अभिनवगुप्त के काव्य-दर्शन की व्याख्या करते हुए 'वक्रोक्ति' को काव्य का व्यापक गुण माना है। 'वक्रोक्ति' को आचार्य कुंतक ने काव्य की आत्मा कहा है। काव्य के भाव-पक्ष की कला-पक्षीय व्याख्या करते हुए उन्होंने काव्य का लक्षण इस प्रकार प्रस्तुत किया है।

"शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी॥"

कुन्तक मानते है कि 'वक्रतामय कवि-कौशलयुक्त मर्मस्पर्शी शब्दार्थ काव्य है। काव्यार्थ सहृदय आह्लादकारी, स्वस्पंद तथा रमणीय होता है। इस प्रकार कुंतक ने काव्य के वर्ण्य-पक्ष पर कम और अभिव्यंजना-पक्ष पर विशेष बल दिया।

<u>मम्मट</u> :- मम्मट ने 'काव्य-प्रकाश' में काव्य-लक्षण को इस प्रकार उल्लेखित किया है —

"तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि"

अर्थात् उन्होंने काव्य में अलंकार की स्थिति वैकल्पिक मानकर उसे गौण बना दिया है। इसमें दोषों के अभाव और गुणों के भाव को प्रधानता प्रदान की है। अपनी सरलता के कारण यह लोकप्रिय हुआ। इसमें मौलिकता कम और वास्तविकता में समझौते की प्रवृत्ति अधिक दिखाई देती है। वे अलंकार-वादियों और गुणवादियों दोनों को खुश करना चाहते थे। उन्होंने रसवाद का भी हमेशा समर्थन ही किया।

विश्वनाथ :- साहित्य-दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ एक रसवादी आचार्य के रूप में प्रसिद्ध है। उन्होंने काव्य-लक्षण को बताते हुए कहा है कि "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"। अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है। उन्होंने शब्द के साथ-साथ रसात्मक वाक्य को काव्य की विशेषता माना है। रसात्मक वाक्य में शब्द और अर्थ दोनों समाहित है।

पंडितराज जगन्नाथ :- "रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम्।" अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है। पंडितराज का काव्य लक्षण अपनी व्यापकता के कारण ही आज भी बहुतों को ग्राह्य है। उनकी 'रमणीयता' की अर्थ-सीमा बहुत खुला क्षेत्र देती है। यह अपनी व्यापकता के कारण ललित कलाओं के संपूर्ण सौंदर्य को अपने में समाहित कर लेता है। चित्र, मूर्ति, वास्तु, काव्य कलाएँ रमणीय अर्थ देती हैं और संगीत रमणीयता।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य लक्षण :-

पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आरंभ प्लेटो (427 ई.पू. से 347 ई.पू.) से होता है। परन्तु उन्होंने काव्य की परिभाषा देने का प्रयत्न नहीं किया बल्कि केवल विवेचन किया। उन्होंने काव्य लक्षण पर विचार करते हुए कहा कि 'काव्य प्रकृति का अनुकरण है और प्रकृति सत्य का अनुकरण।' अनुकरण का अनुकरण होने के कारण वह सत्य से दूर हो जाता है। अरस्तू ने भी अपने गुरु की ही तरह काव्य की परिभाषा नहीं की। लेकिन काव्य-विवेचन के दौरान ऐसे विचार व्यक्त किए कि उनके आधार पर काव्य लक्षण का निर्माण किया जा सकता है। वे कहते हैं- 'काव्य एक कला है, चित्रकार अथवा किसी भी अन्य कलाकार की ही तरह कवि अनुकर्ता है।'

लांजाइनस का नाम यूनानी काव्यशास्त्र में अरस्तू के बाद आदर के साथ लिया जाता है। वे भी अरस्तू की ही भाँति 'काव्य' और 'प्रकृति' के अंत: संबंध पर विचार करते हैं।

विलियम वर्डसवर्थ ने काव्य-लक्षण के संबंध में कहा है- "कविता बलवती भावनाओं का सहज उच्छलन होती है। शांत अवस्था में भाव के स्मरण से उसका उद्भव होता है। सैमुअल टेलर ने जैव-सिद्धांत को काव्य संबंधी अपनी धारणा में स्थान दिया है। इसी प्रकार आई.ए. रिचर्ड्स ने माना कि काव्य पूर्णत: एक अनुभूति है। जीवनानुभूति।

Scanned with CamScanner

टी. एस. एलियट ने काव्य-चिंतन में 'एण्टी-रोमाण्टिक' रवैया अपनाया है। उन्होंने कहा - 'कविता या कला ... अभिव्यक्ति का एक माध्यम मात्र है जो केवल माध्यम है, व्यक्तित्व नहीं।

इसी प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों ने भी काव्य-लक्षण को अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल और भक्तिकाल में काव्य-लक्षण का संकेत मात्र तुलसीदास कृत 'मानस' में मिलता है। रीतिकालीन कवि-आचार्य सामान्यतः संस्कृत काव्यशास्त्र के काव्य लक्षणों की नकल ही करते हैं। रीतिवाद का विरोध करते हुए आधुनिक काल में आचार्य द्विवेदी ने शब्द और अर्थ की व्यापकता को सामाजिकता से जोड़ दिया। उन्होंने पाश्चात्य कवि वर्ड्सवर्थ की भाँति कविता के लिए बोलचाल की भाषा का प्रतिमान अपनाने की बात कही। वही आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने निबंध 'कविता क्या है' में काव्य लक्षण को परिभाषित करते हुए कहते हैं - 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्तावस्था के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है उसे कविता कहते है।

हिन्दी के छायावादी कवियों ने काव्य लक्षण पर नए ढंग से विचार किया। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने कविता को हृदय का उच्छ्वास मानते हुए कहा है - 'तुम विमल हृदय उच्छ्वास और मैं कान्तकामिनी कविता।' 'काव्य-अभिव्यक्ति है' यह धारणा प्रसाद, पंत और महादेवी वर्मा भी व्यक्त करते हैं।

गजानन माधव मुक्तिबोध ने काव्य लक्षण के संदर्भ में कहा है - 'काव्य एक सांस्कृतिक प्रक्रिया' है। प्रगतिवादी काव्य-प्रक्रिया को छायावादी काव्य-प्रक्रिया से भिन्न मानते हैं। प्रगतिवादी के काव्य चिंतन का स्वर मार्क्स से प्रभावित है।

डॉ० रामविलास शर्मा ने 'प्रगति और परम्परा' में

Scanned with CamScanner

पुस्तक में माना है कि 'वह (काव्य) एक महान सामाजिक क्रिया है – जो सामाजिक विकास के समानांतर विकसित होती रहती है। कविता सामाजिक यथार्थ का ~~चित्रण~~ चित्रण करती है। हिन्दी के अधिकांश आरंभिक प्रगतिवादी काडवेल की इस मान्यता को मानते है कि 'साहित्य वह मोती है जो समाज-रूपी सीपी में पलता है।

निष्कर्षत: हम कह ~~सक~~ सकते है कि काव्य का ~~उद्देश्य~~ ~~किंचित्~~ रचना किंचित उद्देश्य को ध्यान में रखकर की जाती है। काव्य के द्वारा कवि जीवन का परिष्कार करता है। भारतीय साहित्य का प्रधान लक्ष्य रस की उत्पत्ति के साथ-साथ सामाजिक उत्थान और जीवनमूल्यों को व्यक्त करना है। आचार्यों द्वारा मूलत: यह स्थापित किया गया है कि काव्य रचना का प्रयोजन उदात्त होना चाहिए क्योंकि यह अपने प्रभाव में समाज को व्यक्त करता है। समाज के परिपेक्ष्य में मानव मूल्यों के हित में काव्य रचनाएँ की गयी। मूलत: काव्य कवि के आंतरिक भावों का प्रवाह है।

Scanned with CamScanner